प्रारब्ध एवं पुरुषार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

नदी के दोनों तटों की भांति प्रारब्ध और पुरुषार्थ जीवन रूपी नौका को चलाने का कार्य करते हैं। मनुष्य मन, वचन और काया से कोई प्रवृत्ति करता है तो वह परमाणुओं को अपनी और आकर्षित करता है। कार्मण शरीर के साथ वह जुड़ जाता है और जुड़कर के बंधन का कार्य करता है। प्रकृति के अनुरूप बंधन होता है। उदय या प्रारब्ध में आने पर अच्छे कार्य का अच्छा परिणाम और बुरे कार्य का बुरा परिणाम मिलता है। प्रारब्ध और उदय दोनों एक हैं। पिछले जन्म के बोये हुए बीज परिणाम के रूप में वर्तमान जन्म में द्रव्य रूप में प्राप्त होते हैं। पूर्व जन्म के कृत्य को हम इस जन्म में भोगते हैं। जीवनकाल पूर्व जन्म से प्राप्त होता है। थियेटर के फिल्म की तरह यह चलता रहता है। मन, वचन और काया की बैटरी से यह कार्य करता है।

वर्तमान भूत और भविष्य का सम्बन्ध मन, वचन और काया से होता है। मानव जीवन का कार्य काया या शरीर से होता है। परिणाम के अनुसार सुख–दुःख प्राप्त होता है। पुरुषार्थ किा जाने वाला उद्योग है। मैंने यह कार्य किया, यह मेरा है, यह पुरुषार्थ नहीं परिणाम है। पुरुषार्थ अपने समय का सदुपयोग है। यदि शरीर से आत्मा निकल जाये तो शरीर नष्ट हो जाता है। अपने स्वरूप का ज्ञान करना दृष्टाभाव से देखना पुरुषार्थ है। स्वभाव में रहना पुरुषार्थ है।

भाग्य और पुरूषार्थ एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों में कार्य और कारण का सम्बन्घ है। दोनों का परस्पर परिवर्तन होता रहता है। आज हम जो कुछ भी सुख सुविधा का उपभोग कर रहे हैं, वह भाग्य से प्राप्त हुआ है। पूर्वजन्म में मैंने कुछ ऐसा पुण्य कर्म किया था जिसका फल हमें सुख रूप में प्राप्त हुआ है। मन, वचन और काया से पाप पुण्य किये जाते हैं। पांचों इन्द्रियां विषयों को ग्रहण कर मन को दे देती है। मन बुद्धि तक उन्हें पहुंचा देता है। जैसी बुद्धि रहती है वैसी सृष्टि हो जाती है। वचन से शुद्ध बोलना चाहिए, शरीर से अच्छी प्रवृत्ति करनी चाहिए। प्रवृत्ति इन्हीं तीनों साधनों से की जाती है।

कुछ लोग भाग्य को मानते है, कुछ लोग पुरुषार्थ को। पुरुषार्थ के बिना भाग्य नहीं बनता। जो हम इस जन्म में कर रहे है चाहे वह अच्छा कर्म है या बुरा इनमें से कुछ कर्मों का फल तो हमें इसी जन्म में प्राप्त हो जाता है और कुछ कर्म प्रारब्ध बन करके अगले जन्म में प्राप्त होते है। भाग्य और पुरुषार्थ का खेल यही से प्रारंभ हो जाता है। इस संसार में कुछ लोग भाग्यवादी है और कुछ लोग पुरुषार्थवादी। भाग्यवादी भाग्य को ही मानकर चलते है ओर कहते है कि जो कुछ भाग्य में लिखा है वही सब होकर रहेगा। पुरुषार्थवादी कहते है कि पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य को बदला जा सकता है। भाग्य के भरोसे बेठे रहने से कार्य नहीं होता। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती हैं, अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते हैं।

हममे से अधिकांश लोग जिने मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती हैं वे स्वयं की कमियों को देखने की बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते हैं। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते हैं जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते हैं। वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होता है जो पुरूषार्थ करता है। भाग्य और पुरुषार्थ एक–दूसरे के पूरक है। पुरुषार्थी अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है। रामधारी सिंह दिनकर कवि ने ठीक ही लिखा है–

दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,

मरता है जो, एक ही बार मरता है।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे।

जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भाग्य भरोसे बैठे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी सफलता अथवा खुशी मिलने पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं और थोड़ी सी कठिनाई आने पर विचलित हो जाते हैं, ऐसे व्यक्तियों से सफलता बड़ी दूर रहती है। ऐसे व्यक्ति स्वयं की कमियों को खोजने तथा उनको ढूंढ़ने के बजाय अपने भाग्य को दोष देते हैं। महात्मा गांधी ने अपने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने पुरुषार्थ से अंग्रेजी दास्ता से मुक्ति दिलायी। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म का मार्ग पुरुषार्थ का मार्ग है। धैर्यपूर्वक अपने पथ पर अडीग रहना चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में यश अर्जित करता है। वह स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार, समाज अथवा देश को गौरवान्वित करता है। भाग्य हमारे कर्मों का फल है कोई ईश्वर इच्छित वस्तु नहीं। हम नित्य प्रति कुछ न कुछ क्रिया करते हैं और उसका परिणाम भी हमें मिलता है। यही परिणाम ही हमारा भाग्य होता है।